SKU शोध संचार

(INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL)

अंक-3, खण्ड-2, अप्रैल - जून 2025 E-ISSN : 2584-2900

रवींद्रनाथ ठाकुर की चित्रकला में भाव और रंगों की अभिव्यक्ति

भक्ति अग्रवाल

सहायक प्राध्यापक (ललितकला)

श्री कृष्णा विश्वविद्यालय, छतरपुर (म.प्र.)

सारांश

रवींद्रनाथ ठाकुर न केवल एक महान साहित्यकार थे, बल्कि उन्होंने चित्रकला के क्षेत्र में भी अपनी अनूठी छाप छोड़ी। उनकी चित्रकला पारंपरिक कलात्मक नियमों से हटकर आत्म-अभिव्यक्ति की एक स्वतंत्र विधा बनकर उभरी। साहित्य, संगीत, शिक्षा और समाज सुधार के क्षेत्र में योगदान देने वाले ठाकुर ने जीवन के अंतिम चरण में चित्रकला को आत्म-अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया। इस शोध में उनकी चित्रकला के भावात्मक पक्षों, रंगों की प्रतीकात्मकता, और चित्रण की शैली का विश्लेषण किया गया है। साथ ही इसमें उनकी चित्रकला के दार्शनिक, सांस्कृतिक तथा आधुनिक कलाजगत पर पड़े प्रभाव का अध्ययन किया गया है। उनकी कला पारंपरिक नियमों से हटकर स्वाभाविक और सहज प्रवाह में विकसित हुई। अमूर्तता, रहस्यवाद, और अंतर्मन की अनुभूतियाँ उनकी चित्रकला को विशिष्ट बनाती हैं। यह शोध उनके चित्रों में प्रयुक्त रंगों, रेखाओं, रूपों और भावनात्मक गहराई की पड़ताल करता है और यह सिद्ध करता है कि रवींद्रनाथ की चित्रकला केवल दृश्य सौंदर्य नहीं बल्कि आत्मिक संवाद भी है।

बीज शब्द

रवींद्रनाथ ठाकुर, चित्रकला, भाव-अभिव्यक्ति, रंग प्रयोग, अमूर्त कला, आत्मानुभूति, आधुनिकता, भारतीय ललितकला।

प्रस्तावना

रवींद्रनाथ ठाकुर (1861-1941) विश्वविख्यात कवि, लेखक, संगीतकार, शिक्षाशास्त्री और नोबेल पुरस्कार विजेता थे। रवींद्रनाथ ठाकुर को मुख्यतः कवि, दार्शनिक, और शिक्षाविद के रूप में

जाना जाता है। परंतु बहुत कम लोग जानते हैं कि उन्होंने अपने जीवन के अंतिम वर्षों में चित्रकला में भी असाधारण योगदान दिया। उनके व्यक्तित्व का एक महत्वपूर्ण पहलू उनकी चित्रकला थी, जिसकी शुरुआत उन्होंने अपने जीवन के उत्तरार्ध में की। बिना किसी औपचारिक कला शिक्षा के उन्होंने एक ऐसी चित्रशैली विकसित की, जो न केवल भारतीय आधुनिक चित्रकला में एक नया अध्याय जोड़ती है, बल्कि उनके भीतर चल रहे भावनात्मक और दार्शनिक विमर्श को भी अभिव्यक्त करती है। उनकी चित्रकला को समझना केवल रंगों और रेखाओं की दृष्टि से नहीं, बल्कि उनके जीवन-दर्शन, व्यक्तित्व और भावनात्मक गहराई से जुड़ा विषय है। उन्होंने कला को 'आत्मा की अभिव्यक्ति' माना और इसे किसी तकनीकी बंधन में नहीं बाँधा। उनका मानना था कि रचना स्वतः प्रकट होती है, यदि आत्मा सचमुच उसे कहना चाहती है।

यह शोध इस बात का विवेचन करता है कि कैसे रवींद्रनाथ की चित्रकला में रंगों और रूपों के माध्यम से गहन भावों की अभिव्यक्ति होती है। इसमें उनके चित्रों की शैली, विषयवस्तु, रंग प्रयोग, अमूर्तता और उनका सांस्कृतिक महत्व विस्तृत रूप से प्रस्तुत किया गया है।

शोध विधि

इस शोध में गुणात्मक शोध विधि का प्रयोग किया गया है। इसके अंतर्गत -

1. रवींद्रनाथ की चित्रों, पत्रों और उनके द्वारा लिखे गए कला विषयक विचारों का अध्ययन।
2. उनकी चित्रकृतियों में प्रयुक्त रंग, आकृतियाँ और रेखाओं का अर्थपूर्ण अवलोकन।
3. कला समीक्षकों, विद्वानों और समकालीन कला इतिहासकारों द्वारा रचित ग्रंथों व लेखों का विवेचन।
4. समकालीन भारतीय और पश्चिमी कलाकारों की शैली से तुलनात्मक दृष्टि से विश्लेषण।

शोध विस्तार

1. चित्रकला की शुरुआत और प्रेरणा - रवींद्रनाथ ने चित्रकला की शुरुआत तब की जब वे लेखन में 'अल्पविराम' की अवस्था में थे। यह उनके लिए एक प्रकार की आत्म-अभिव्यक्ति और आत्मचिंतन की साधना थी। उनकी पेंटिंग किसी कलात्मक परंपरा का अनुकरण नहीं थी, बल्कि

एक आंतरिक आवश्यकता की पूर्ति थी। उन्होंने अपने हस्तलिपि की त्रुटियों को चित्रों में रूपांतरित करना आरंभ किया। धीरे-धीरे यही 'आकस्मिक रचना' उनकी शैली बन गई। उनके चित्रों में कल्पनाशीलता, स्वप्निलता और अमूर्तता के तत्व स्पष्ट दिखाई देते हैं।

2. भावनाओं की विविधता और गहराई - उनकी चित्रों में भय, असुरक्षा, विषाद, कल्पना, करुणा, रहस्य, गूढ़ता और आत्ममंथन जैसे भाव प्रमुखता से दिखाई देते हैं। वे अमूर्त आकृतियों और विकृत चेहरे या पशु-मानव सम्मिश्रित रूपों द्वारा गहन भावनात्मक अवस्थाओं को चित्रित करते हैं। बहुत-सी चित्रकृतियाँ ऐसी आकृतियों को दर्शाती हैं, जो आधे-मानव और आधे-प्राणी जैसे हैं, या जिनके चेहरे अस्पष्ट हैं। यह मनुष्य के भीतर छिपे भय और जिज्ञासा का प्रतीक है।

3. रंगों का प्रयोग और प्रतीकात्मकता - रवींद्रनाथ का रंगों के प्रति दृष्टिकोण पूर्णतः अनुभवात्मक और भावप्रधान था। वे चटक और गहरे रंगों का प्रयोग करते थे – जैसे काला, गाढ़ा लाल, नीला और हरा। ये रंग उनके चित्रों में भावनात्मक तनाव, रहस्य और आत्मसंघर्ष के संकेत बनते हैं। रंगों का कोई यांत्रिक प्रयोग नहीं है, बल्कि वे भावनाओं की गहराई से उभरे प्रतीक बन जाते हैं।

काला - रहस्य, अनिश्चितता, भय
लाल - शक्ति, संघर्ष, भावनात्मक तीव्रता
नीला - शांति और गहराई
हरा - जीवन और पुनर्जन्म

उनके रंगों का प्रयोग किसी परंपरागत रंगसिद्धांत पर आधारित नहीं था, बल्कि यह एक व्यक्तिगत और अंतःप्रेरित चयन था।

4. रेखाओं और आकृतियों की भूमिका - उनकी रेखाएँ लयात्मक, गतिशील और मुक्त रूप की होती थीं। उन्होंने रचनात्मक रूप से मानव चेहरे, आकृतियों, वन्य प्राणियों और कल्पनाशील रूपों

को मिलाकर विशिष्ट चित्रमय भाषा विकसित की। स्पष्ट रूपरेखा की जगह भावनाओं और स्वप्न जैसी धुँधली कल्पनाओं को अधिक स्थान मिलता है। चेहरे विकृत, आंखें रहस्यमयी, और आकृतियाँ असामान्य होती हैं - जो दर्शक को ध्यान, सोच और आत्मावलोकन के लिए प्रेरित करती हैं।

5. अमूर्तता और आधुनिक दृष्टिकोण - हालाँकि रवींद्रनाथ ठाकुर की चित्रकला पूरी तरह अमूर्त नहीं कही जा सकती, परंतु उनकी शैली पर अमूर्तता का प्रभाव स्पष्ट है। उन्होंने यूरोपीय आधुनिक कला की रचनात्मक स्वतंत्रता को आत्मसात किया, लेकिन उसे भारतीय आत्मा और दर्शन के साथ जोड़ा। परंतु उन्होंने अपनी कला को पूरी तरह भारतीय सांस्कृतिक और आध्यात्मिक संदर्भों में रचा। यही कारण है कि उनकी कला 'भारतीय आधुनिकता' की एक सशक्त मिसाल बनती है।

6. कला के प्रति उनकी दृष्टि - उनके अनुसार, "कला किसी यांत्रिक प्रशिक्षण का परिणाम नहीं, बल्कि आत्मा की पुकार है।" उन्होंने कला को बौद्धिक या तकनीकी नहीं, बल्कि आत्मिक प्रक्रिया माना। यही कारण है कि उनकी चित्रकला पाठ नहीं सिखाती, बल्कि अनुभव कराती है।

निष्कर्ष

रवींद्रनाथ ठाकुर की चित्रकला विशुद्ध रूप से उनके अंतर्मन की अभिव्यक्ति एवं एक स्वतंत्र और विशिष्ट कलाजगत है। उन्होंने पारंपरिक तकनीकों या विषयों से हटकर कला को एक आंतरिक संवाद का माध्यम बनाया। उनकी चित्रकला में भावों की तीव्रता और रंगों की गूढ़ता दर्शाती है कि कला केवल सौंदर्यबोध नहीं, बल्कि आत्मिक अनुभव भी है। जहाँ परंपरा से परे जाकर एक आत्मा अपने भीतर के रंगों और भावों को अभिव्यक्त करती है। उनकी चित्रशैली न तो किसी विशेष विद्यालय से जुड़ी थी, न ही किसी आंदोलन से - यह पूरी तरह व्यक्तिगत और मौलिक थी। उन्होंने रंगों, आकृतियों और रेखाओं के माध्यम से वह कहा, जो शब्दों में नहीं कहा जा सकता था।

उनकी चित्रकला आधुनिक भारतीय कला को एक नई दिशा देती है, जहाँ आत्म-अभिव्यक्ति को प्राथमिकता मिलती है। उनकी कला को केवल सौंदर्य या तकनीक के मापदंडों पर नहीं मापा जा सकता - यह एक आध्यात्मिक अनुभव है, जो देखने वाले को स्वयं में झाँकने का अवसर देता है। आज भी उनकी कला प्रेरणा, शोध और आत्म-चिंतन का स्रोत बनी हुई है।

संदर्भ

1. Tagore, Rabindranath. Rabindranath Tagore: A Painter's Mind, National Gallery of Modern Art, New Delhi.
2. Chakravarty, Radha. Tagore: A Critical Introduction, Orient Blackswan.
3. Mitter, Partha. Indian Art: Modernity and Nationalism, Oxford University Press.
4. Kumar, Siva, Tagore, R. Rabindranath: A Quest for Modernity, Visva-Bharati Publications.
5. भारतीय आधुनिक चित्रकला पर अकादमिक शोध पत्र, कला विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय।
6. National Gallery of Modern Art, New Delhi - Rabindranath Tagore's Painting Collections and Catalogs.
7. Dutta, Krishna & Robinson, Andrew. Rabindranath Tagore: The Myriad-Minded Man, Bloomsbury Publishing.
8. Visva-Bharati University Archives and Art Gallery Publications.